आप तो बहो होकम बहो...

एक गाँव में एक भोई मछुआरा और भोपण रहते थे। भोपण बुद्धिमान और बड़ी दयालु थी। भोई भी बहुत तेज़ बुद्धि का था। दोनों पति-पत्नी नदी किनारे झोपड़ी बनाकर रहते थे। साग-सब्ज़ी बोकर अपना गुज़ारा करते।

उसी गाँव में एक ठाकुर रहता था। वह अकसर गाँव के सीधे-सादे लोगों पर रौब झाड़ता। एक बार नदी में बाढ़ आई। उस बाढ़ में वह ठाकुर बहकर जा रहा था। ठाकुर को बहते देख भोपण ने कहा, "बेचारा ठाकुर बहकर जा रहा है उसे बचा लो।" "बेचारा" शब्द सुनकर ठाकुर गुस्सा हो गया। उसने भोपण से कहा, "तू मुझे बेचारा कह रही है तुझे शर्म नहीं आती?"

भोई ने तुरन्त ही बोला, "अन्नदाता, ये औरत रजवाड़ी रीति नहीं जानती, आप तो बहो होकम बहो।"

मालवा के दो रंग

बंशीलाल परमार

एक खेल - एक गीत

अपने सब दोस्तों को बुला लो। अक्कड़-बक्कड़ से या पीठ के पीछे उँगली रख कर या कोई दूसरे तरीके से एक दोस्त चुनो जो दाम देगा।

फिर बाकी के सारे दोस्त एक गोले में बैठ जाओ। गोले में बैठे दोस्तों में से एक के हाथ में कँकड़ होगा। दाम देने वाले को पता लगाना है कि कँकड़ किसके हाथ में है। दाम देने वाला अन्य साथियों के हावभाव देखकर, हरकतें देख कर पता लगाता है कि किसके हाथ में कँकड़ है। अगर वह पता लगा लेता कि कँकड़ किसके हाथ में है तो फिर उसी दोस्त को दाम देना होगा जो पकड़ में आया है। इस खेल को खेलते हुए बच्चे एक गाना गाते जाते हैं। गाना पास के गोले में दिया है।

काँकरो - पत्थर
परी - लोहे का बर्तन
घीसा बारो - एक दुकानदार के लिए
मीठो तेल - खाने वाला तेल
नाहर - शेर
उँकरो - ओखली